Institute of Chinese Studies
ICS Analysis
中国研究所 DELHI
No. 27 February 2015

वह होंगे या नहीं होंगे? दलाई लामा के अवतार पर चीन और तिब्बत के बीच ताज़ा बहस

शेरिंग छोनज़ोम
एसोसिएट फेलो, चीन अध्ययन संस्थान, दिल्ली
tsheringjnu@gmail.com

दलाई लामा के बाद की स्थिति और चीन तिब्बत समस्या पर इसके प्रभाव को लेकर लंबे समय से चर्चा चल रही है। इस बड़ी बहस से जुड़ी हुई, लेकिन सर्वव्यापी चर्चा हमें दलाई लामा के अवतार या zhuanshi (转世) से संबंधित सवाल की तरफ़ ले जाती है। चर्चा मूलतः इस बात को लेकर हो रही है कि दलाई लामा का अवतार तिब्बत में या तिब्बत के बाहर होगा, और दूसरा यह कि अगले दलाई लामा को चुनने का अंतिम अधिकार किसे है? (Dalai Lama n.d; Ramzy 2008; The Weekly Voice 2011)

नए दलाई लामा के अवतार से संबंधित मुद्दे पर ताज़ा बहस बीबीसी द्वारा 17 दिसंबर 2014 को दलाई लामा का इंटरव्यू प्रकाशित करने के बाद शुरू हुई, जिसका विचारात्मक शीर्षक था 'Dalai Lama concedes he may be the last' (दलाई लामा यह मानते हैं कि वह अंतिम दलाई लामा हो सकते हैं) (BBC 2014)। इस साक्षात्कार को बहुत ध्यान से पढ़ने की ज़रूरत है, क्योंकि 9 सितंबर 2014 को एक जर्मन दैनिक Die Welt or Welt am Sontag (Eigendorf 2014a) द्वारा दलाई लामा के इंटरव्यू पर आधारित रिपोर्ट

प्रकाशित करने के बाद इसी मुद्दे के संदर्भ में मीडिया में हंगामा हुआ था। इस रिपोर्ट का शीर्षक था 'Der Dalai Lama will keinen Nachfolger mehr haben' या 'दलाई लामा का कोई उत्तराधिकारी नहीं होगा'। ऐसा प्रतीत होता है किQW अधिकतर रिपोर्टों और लेखों को लिखने से पहले उस इंटरव्यू के लंबे जर्मन प्रतिलेख को पूरा पढ़ा नहीं गया होगा (जो Eigendorf 2014b पर उपलब्ध है), क्योंकि अगर इसे ध्यान से पढ़ा गया होता, तो इस मुद्दे पर दलाई लामा के विचार बेहतर ढंग से समझ में आ सकते थे।

> *चर्चा मूलतः इस बात को लेकर हो रही है कि दलाई लामा का अवतार तिब्बत में या तिब्बत के बाहर होगा, और दूसरा यह कि अगले दलाई लामा को चुनने का अंतिम अधिकार किसे है?*

Ganden Phodrang, गांदेन फोदरंग जिसे दलाई लामा ने अपना उत्तराधिकारी चुनने का पूरा अधिकार दे रखा है, के अधिकारियों ने Welt am Sontag की रिपोर्ट प्रकाशित होने के 24 घंटों के अंदर ही इसे 'अधूरा' कहते हुए ख़ारिज कर दिया। हैरानी की बात यह है कि खंडन या अनुशेष पर किसी का ध्यान नहीं गया।

इन 'अधूरी' रिपोर्टों ने भी पहले से ही कमज़ोर चीन-तिब्बत संबंधों पर ध्यान देने योग्य प्रभाव डाला।ख़ासतौर पर चीनी अधिकारियों और मीडिया की प्रतिक्रियाएं मज़ेदार रहीं. इस लेख का पहला भाग इसी पहलू से संबंधित है, उसके बाद ख़बरों की भूखी मीडिया के लिए दलाई लामा के अपेक्षित बयानों में छुपे संदेश को समझने की कोशिश की जाएगी। साक्षात्कारों के मात्र सारांशों या zhaiyao (摘要) पर आश्रित रहने के बजाय। इस विश्लेषण में वीडियो या लिखित प्रारूप में उपलब्ध पूर्ण साक्षात्कारों का सहारा लिया जाएगा। बात को समाप्त करने से पहले, दोनों तरफ़ की कुछ चिंताओं का भी संक्षिप्त विश्लेषण किया जाएगा।

चीन-तिब्बत संबंधों की कमज़ोर कड़ियों का खुलासा

इन दोनों साक्षात्कारों पर चीनी अधिकारियों और विद्वानों की तरफ़ से दिये गए बयानों की समीक्षा से पता चलता है कि चीनी पक्ष पुनर्जन्म के मुद्दे पर मीडिया के हालिया दुष्प्रचार को किस तरह लेता है ।

उदाहरण के तौर पर पहला यह कि, जातीय और धार्मिक मामलों की समिति के अध्यक्ष (CPPCC), झू वेछुन (Reuters 2014) तथा चीनी सामाजिक विज्ञान अकादमी के एक शोधकर्ता, छिन योंगझांग (China Tibet Online 2014a, 2014), दोनों ही दलाई लामा के इस क़दम को अंतरराष्ट्रीय नौटंकी के रूप में देखते हैं । दूसरा, विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता, हुवा छुनयिंग (China Daily 2014) के साथ-साथ ये दोनों अगले दलाई लामा के चयन में चीनी केंद्रीय सरकार की भूमिका के अधिकार पर ज़ोर देते हैं। तीसरा हालांकि ये सभी दलाई लामा के मक़सद को गहरे शक की नज़र से देखते हैं, फिर भी दलाई लामा

के उद्देश्य – कि अगले दलाई लामा का जन्म चीन में नहीं होगा–के बारे में छिन के मूल्यांकन को कमोबेश सही कहा जा सकता है। नए दलाई लामा के अवतार से संबंधित मुद्दे पर 24 सितंबर 2011 को दिये गए अपने एक महत्तवपूर्ण बयान में दलाई लामा ने कहा थाः

> "यह बात याद रखो कि, नए दलाई लामा को अवतार मानने के गांदेन फोदरंग के वैध तरीक़ों और मंज़ूरी के अलावा, उस उम्मीदवार को कोई भी मान्यता या स्वीकृति नहीं मिलनी चाहिए, जिसे किसी के द्वारा राजनीतिक उद्देश्य के लिए चुना गया हो, भले ही वह चीनी जनवादी गणराज्य के लोगों द्वारा ही क्यों न चुना गया हो।(दलाईलामा 2011)

चौथा, 'केन्द्रीय सरकार के लिए परेशानियाँ पैदा करने' के दलाई लामा के उद्देश्य को लेकर छिन की समझ में इस तथ्य का अभाव है कि असल में यह दलाई लामा के द्वारा चीन का ध्यान आकर्षित करने और बीजिंग को वार्ता की मेज़ पर लाने की एक कोशिश हो सकती है. समस्या पैदा करने को, उन मायनों में, इसे दलाई लामा की रणनीति कहा जा सकता है, बजाए इसके कि यह अपने आप में एक अंत हो । पाँचवाँ, हुवा और छिन दोनों ही इतिहास और परंपरा के पक्ष में बात करते हुए दिखाई देते हैं, जबकि झू इसे बीजिंग का विशेषाधिकार मानते हैं, जो इस बात का फ़ैसला करेगा कि दलाई लामा संस्था चलनी चाहिए या नहीं।

लेकिन, हुवा की इतिहास के अनुपालन की बात इसलिए असंगत है, क्योंकि वह 'स्थापित धार्मिक प्रक्रियाओं' के अनुपालन की भी माँग करती हैं, जो कि पूर्णतया संभावित, चीन के सबसे ताज़ा 2007 के धार्मिक मामलों के लिए राज्य प्रशासन के नियम की ओर इशारा है, जिसमें अवतार का रूप प्राप्त कर चुके भिक्षुओं के चुनाव की प्रक्रियाओं का वर्णन किया गया है। (नीचे इस पर पूरे विस्तार से बात की गई है)

> *चीनी विद्वान अगले दलाई लामा के चयन में चीनी केंद्रीय सरकार की भूमिका के अधिकार पर ज़ोर देते हैं*

इस प्रसंग में, अवतार मानने की प्रक्रियाओं की ऐतिहासिक शुचिता का हवाला, दलाई लामा का जवाब देने के लिए शक्तिशाली उपदेशात्मक उपकरण प्रतीत होता है।

दलाई लामा के बयानों की विवेचना

Welt am Sontag के इंटरव्यू में दलाई लामा के जवाब, जो हालाँकि नपे-तुले हैं, ऐसा लगता है कि इंटरव्यू लेने वाले को यह बताने की कोशिश है कि एक व्यक्ति के तौर पर दलाई लामा महत्तवपूर्ण नहीं हैं । इसलिए, जब उनसे बिल्कुल सीधे तरीक़े से सवाल किया गया, तो उन्होंने टाल-मटोल के अंदाज़ में और कुछ हद तक वक्रपटुता के साथ जवाब देना पसंद कियाः 'मैं कभी-कभी मज़ाक़ में कहता हूँ' कि दलाई लामा संस्था लगभग पाँच शतकों से चली आ रही है और

इसीलिए, 'अब, चौदहवें दलाई लामा, जोकि काफ़ी लोकप्रिय हैं, के साथ यह परंपरा समाप्त हो सकती है'।

> *नए दलाई लामा के चुनाव के लिए 'तिब्बतीलोग' तथा दूसरे बौद्धों जैसे बाहरी पक्षों पर ज़िम्मेदारियाँ हस्तानांतरित करने की बात करके दलाई लामा नई अटकलों और पैंतरेबाज़ी को मौक़ा दे रहे हैं।*

इस इंटरव्यू के अंत में निहायत ही गंभीर मुद्रा में, उन्होंने दो बार यह संकेत दिया कि वह 'दोबारा जन्म' लेना चाहते हैं। पहली बार, उन्होंने शांतिदेव से अपनी पसंदीदा प्रार्थना की लाइनें कोट कीं – 'मैं उस वक्त तक ठहरूँगा, जब तक दुनिया में संवेदनशील प्राणियों का दुख-दर्द बाक़ी रहेगा'। दूसरी बार, उन्होंने पहले दलाई लामा की कहानी बयान की, जिनसे जब उनके शिष्यों ने पूछा कि क्या वह 'दिव्यभूमि' पर जाने के लिए तैयार हैं, तो उन्होंने जवाब देते हुए कहा था कि वह 'किसी मुश्किल जगह पर दोबारा जन्म लेना चाहते हैं, जहाँ पर वह दूसरों के काम आ सकें'। इसी तरह के जज़्बे के साथ उन्होंने, अर्थात मौजूदा दलाई लामा ने क़बूल किया कि 'मैं भी यही प्रार्थना करता हूँ'।

बीबीसी के इंटरव्यू में भी वही बातें की गईं, जो Welt am Sontag के इंटरव्यू में थीं। इस सीधे सवाल पर कि 'तो पंद्रहवाँ दलाई लामा नहीं होगा ?', उन्होंने स्पष्ट जवाब दिया कि 'यह पूरी तरह हालात पर निर्भर है'। लेकिन इसके साथ ही, उन्होंने इस पूरी बातचीत में तिब्बत के लोगों की श्रेष्ठता पर ज़ोर दिया (BBC 2014)। 25 नवंबर 2014 को Nikkei के इंटरव्यू में उन्होंने कहा कि वह '1969 से ही' इस पर ज़ोर दे रहे हैं। मज़ेदार बात यह है कि इस बार उन्होंने बहस के दायरे को बढ़ाते हुए दलाई लामा संस्था के भाग्य का फ़ैसला करने वालों की सूची में 'बौद्धों और मंगोलों' को भी जोड़ दिया।

ऊपर की चर्चा दलाई लामा की इस इच्छा को ज़ाहिर करती है कि अगर उन्हें 'कार्मिक' आदेश मिलता है तो वह दोबारा जन्म लेना चाहेंगे (Dalai Lama n.d. को भी देखें)। शायद यही वजह है कि वह 'मज़ाक़' शब्द का प्रयोग करके, धार्मिक उद्देश्य बताकर , इस प्रकार की टिप्पणी करते हैं कि यह सब 'हालात' पर निर्भर करता है। नए दलाई लामा के चुनाव के लिए 'तिब्बतीलोग' तथा दूसरे बौद्धों जैसे बाहरी पक्षों पर ज़िम्मेदारियाँ हस्तानांतरित करने की बात करके वे नई अटकलों और पैंतरेबाज़ी का मौक़ा दे रहे हैं।

संबंधित चिंताएं

इसमें कोई शक नहीं है कि पुनर्जन्म का मुद्दा तिब्बत की ऐतिहासिक स्थिति के सवाल और अतीत में दलाई लामा, जो कि 17वीं शताब्दी से ही तिब्बती बौद्धधर्म का सर्वोच्च पद रहा है, की नियुक्ति पर किसका कंट्रोल था और भविष्य में किसका रहेगा, से जुड़ा हुआ है। यह एक ऐसा धार्मिक मुद्दा है, जो (जैसा कि समझा जाता है) चीन-तिब्बत मतभेद के चारों तरफ़ दांव पर लगा

हुआ है, सिर्फ़ ऐतिहासिक प्रतिनिधित्व के मामले में ही नहीं, बल्कि भविष्य के परिणामों के मामले में भी । इसलिए, इसमें कोई हैरानी की बात नहीं है कि चारों तरफ़ भारी कोलाहल है।

धर्मशाला के एक तिब्बती अधिकारी, थूबतेन साम्फेल का 2008 में दिया गया यह बयान कि 'दलाई लामा की संस्था तिब्बत की एक बडी शक्ति है ----- लेकिन साथ ही यह हमारी एक कमज़ोरी भी है, क्योंकि हम सभी लोग उनके ऊपर आश्रित हैं' (Ramzy 2008में कोट किया गया), तिब्बती दुविधा का सार है। दूसरी तरफ़, चीन ख़ासकर इसलिए चिंतित होगा, क्योंकि 17वीं शताब्दी में पांचवें दलाई लामा ने अपना उत्तराधिकारी चुनने से चीन को रोकने का 'जटिल प्रयास' किया था। (Barnett 2011a)

यह 18वीं शताब्दी के अंत में मानचू छिंग साम्राज्य द्वारा लिए गये उस फ़ैसले को विस्तार से बताता है, जब उसने 'स्वर्ण कलश सिस्टम' के नाम से एक नई प्रणाली शुरू की थी, जिसके तहत भावी उम्मीदवारों के नाम लिखकर एक कलश में डाल दिये जाते थे और फिर उसमें से लॉटरी निकालकर वास्तविक अवतार को चुना जाता था। येल विश्वविद्यालय की जूलिया फैमुलारो ने इस विषय पर किये गए अपने एक व्यापक विश्लेषण में लिखा है कि 'ख़ुद आधुनिक पीआरसी इतिहासकार इस बात को मानते हैं कि कलश प्रक्रिया का उपयोग लगभग विवेकाधीन होने के मुद्दे पर असंगत था'।(2012: 6)

इस मुद्दे ने लोगों का ध्यान एक बार फिर उस वक़्त आकर्षित किया, जब 21वीं शताब्दी में चीनी सरकार ने दोबारा अपना दावा ठोंकने की कोशिश की। चीनी धार्मिक मामलों के राज्य प्रशासन ने 18 जुलाई 2007 को एक नया नियम या guiding (规定) (आदेश नं. 5) जारी किया, जिसे 1 सितंबर 2007 से प्रभावी होना था, जिसका बुनियादी मक़सद 'किसी भी विदेशी संगठन या व्यक्ति' को अवतार के चुनाव की प्रक्रिया से दूर रखना था । (Congressional Executive Commission on China 2007; अनुवादित दस्तावेज़ के लिए, देखें International Campaign for Tibet 2007)

पुनर्जन्म का मुद्दा एक ऐसा धार्मिक मुद्दा है, जो (जैसा कि समझा जाता है) चीन-तिब्बत मतभेद के चारों तरफ़ दांव पर लगा हुआ है, सिर्फ़ ऐतिहासिक प्रतिनिधित्व के मामले में ही नहीं, बल्कि भविष्य के परिणामों के मामले में भी

इसमें नए पद पर आसीन किये गए साधू (Monk) के पद के अनुरूप पात्रता शर्तें, आवेदन प्रक्रियाएं और मंज़ूरी के लिए किन सरकारी तथा धार्मिक संस्थाओं से संपर्क करना है, का उल्लेख किया गया था ।

इस नियम को लेकर तिब्बत की जनता और धर्मशाला में मौजूद नेताओं ने काफ़ी बहस और चर्चाएं कीं । अगले दलाई लामा को चुनने की

संभवतः चीनी योजना को विफल करने के लिए बहुत से सुझाव दिये गए, जैसे दलाई लामा से कहा गया कि वह पूरी तरह रिटायर होने की बजाय नाममात्र शक्तियों के साथ राज्य के संवैधानिक मुखिया की भूमिका निभाएं (Norbu 2007), उनसे कहा गया कि वह अपनी ज़िंदगी में ही 'पंद्रह या बीस वर्ष के किसी युवा' को 15वाँ दलाई लामा नियुक्त कर दें (Sangay 2008) । तिब्बत में 2008 में भारी पैमाने पर होने वाले विरोध प्रदर्शन और चीन-तिब्बत वार्ता की धीमी गति के कारण, दलाई लामा ने 2011 में पूर्णतया रिटायरमेंट का फैसला ले लिया. दलाई लामा के राजनीतिक सेवा से रिटायरमेंट के फ़ैसले के साथ ही अवतार से संबंधित मुद्दे पर एक लम्बा नीति वक्तव्य भी जारी किया गया । (देखें Dalai Lama 2011; विश्लेषण के लिए, देखें Barnett 2011b तथा Famularo 2012)

> *दलाई लामा के द्वारा चुनाव की प्रक्रिया में चीन को भागीदारी देने की ओर अप्रत्यक्ष इशारा एक महत्तवपूर्ण बिंदु है जिसमें चीन-तिब्बत संबंधों की साख बचाने और डील करने की अपार क्षमता है*

इसमें उन्होंने स्पष्ट किया कि 'मैं जब 90 साल का हो जाऊंगा, तो तिब्बती बौद्ध परंपरा के उच्च लामाओं, तिब्बती जनता, और जो लोग तिब्बती बौद्धधर्म को मानते हैं, उनसे विचार-विमर्ष करूँगा और पता लगाऊँगा कि दलाई लामा की संस्था आगे जारी रहनी चाहिए या नहीं' । (Dalai Lama 2011) और, अगर यह संस्था जारी रही, तो गदेन फोदरांग ट्रस्ट को, इसकी वर्तमान धार्मिक शक्ल में, अगले दलाई लामा को चुनने की ज़िम्मेदारी होगी।

धर्मशाला में होने वाली इस गतिविधि से चीन बेख़बर नहीं था। शिंहुआ में छपे एक लेख में इसे "तिब्बत को आज़ाद कराने" की दलाई लामा का एक प्रयास बताया गया (Xinhua 2011)। चीनी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता, हाँग ली ने बडी सावधानी से अपनी प्रतिक्रिया (Sehgal 2011) व्यक्त की थी । उन्होंने पुरानी आपत्ति तो जताई, लेकिन शायद स्वर्ण कलश प्रणाली के आधार पर चीनी दावों की कमजोरी के संज्ञान ने उनको इतिहास की गहराई में जाने से रोक दिया। उन्होंने कहा कि 14वें दलाई लामा को' तत्कालीन रिपब्लिकन सरकार से मंज़ूरी मिली थी'।

इस मामले में रिपब्लिकन चीन की भागीदारी की लंबी और घुमावदार कहानी को ध्यान में रखते हुए, यह कहना काफ़ी है कि 10 फ़रवरी 1936 को 'लामाओं को अवतार घोषित करने के तरीक़े 'शीर्षक से उसने अपनी नीति से संबंधित जो दस्तावेज़ प्रकाशित किया था, उसका 14वें दलाई लामा के चुनाव पर ' बहुत कम प्रभाव 'हुआ। (Famularo 2012:7-8)

निष्कर्ष

यह स्पष्ट है कि 2007 और 2011 के दोनों विवादित दस्तावेज़ क्रमशः चीनी जनवादी गणराज्य (पीआरसी) तथा दलाई लामा के द्वारा

मूलरूप से अपनी-अपनी भूमिका पर ज़ोर देने और दूसरे की भूमिका को ख़ारिज करने की कोशिश है। इस संदर्भ में, हमें दलाई लामा के ख़िलाफ़ चीन की शिकायत की ओर ध्यान देने की जरूरत है जिसमें चीन कहता है कि वे (दलाई लामा) 'इतिहास को बिगड़ना तथा नकारना' चाहते हैं और साथ ही 'तिब्बत के सामान्य बौद्धधर्म को' नुक़सान पहुँचाना चाहते हैं (China Daily 2014) । इस प्रकार की शिकायत इन मायनों में समस्याग्रस्त और असंगत है कि जहाँ एक तरफ़ धार्मिक तथा ऐतिहासिक परंपराओं की अपरिवर्तनीय स्थिति का सवाल दार्शनिक बहस का विषय है, वहीं दूसरी ओर राजनीतिक ज़रूरत ने दोनों तरफ़ से चतुराई और नवाचार को जन्म दिया है।

ज़ाहिर है, मौजूदा समय में यह सवाल और भी महत्तवपूर्ण हो चुका है, जिसे ऐतिहासिक या धार्मिक प्रमुखता को उजागर करके, या फिर चुनाव की प्रक्रिया में किसी एक पर दूसरे की श्रेष्ठता को जताकर कम नहीं किया जा सकता। यह सवाल, कि दलाई लामा के बाद वाले समय में जब शायद दो या दो से अधिक दलाई लामा होंगे?, अपनी जगह अब भी बरक़रार है।

2011 के बयान को ध्यानपूर्वक पढ़ने से पता चलता है कि दलाई लामा इस सर्वोच्च धार्मिक पद पर किसी को नियुक्त करने में चीन की भूमिका को पूरी तरह ख़ारिज नहीं करते; अलबत्ता, वह इसकी ओर अप्रत्यक्ष रूप से इशारा करते हैं. वह जहाँ एक तरफ़ यह कहते हैं कि 'अवतार घोषित करने के चीनी "स्वर्ण कलश" सिस्टम में तिब्बत के लोगों का (ऐतिहासिक तौर पर) कोई विश्वास नहीं है, क्योंकि इसमें आध्यात्मिक गुण की कमी है', वहीं दूसरी तरफ़ अगले ही वाक्य में वह सुझाव देते हैं कि 'अगर इसका प्रयोग ईमानदारी से किया गया, तो इसमें हम अनुमान के dough-ball तरीके को (zen tak) या ཟན་རྟགས་ अपना सकते हैं'। इसको यूँ भी कहा जा सकता है कि यह उनके द्वारा चुनाव की प्रक्रिया में चीन को भागीदारी देने की एक कोशिश है, इस पूर्व-शर्त के साथ कि वह इसे 'ईमानदारी' से करेंगे । इस महत्तवपूर्ण बिंदु, जिसमें चीन-तिब्बत संबंधों की साख बचाने और डील करने की अपार क्षमता है, को दुर्भाग्यवष नज़रअंदाज़ किया गया है।■

REFERENCES

Barnett, Robert. 2011a. 'The Dalai Lama's 'Deception': Why a Seventeenth-Century Decree Matters to Beijing', 6 April, http://www.nybooks.com/blogs/nyrblog/2011/apr/06/dalai-lamas-deception/ (accessed on 18 December 2014).

Barnett, Robert. 2011b. 'Between the Lines: Interpreting the Dalai Lama's Statement on his Successor', 14 October, http://www.thechinabeat.org/?p=3873 (accessed on 12 January 2014).

BBC. 2014. 'Dalai Lama concedes he may be the last', 17 December 2014, http://www.bbc.com/news/world-asia-china-30510018 (accessed on 23 December 2014).

China Daily. 2014. 'Dalai Lama urged again to respect reincarnation', 11 September, http://eng.tibet.cn/2012sy/xw/201409/t20140911_2019674.html (accessed on 22 December 2014).

China Tibet Online. 2014a. 'Why did the Dalai Lama say he will not be reincarnated?', 12 September, http://eng.tibet.cn/2012sy/xw/201409/t20140912_2019791.html (accessed on 22 December 2014).

China Tibet Online. 2014b. 'Dalai Lama has no say in reincarnation issue', 22 December, http://eng.tibet.cn/2012sy/xw/201412/t20141222_2171473.html(accessed on 23 December 2014).

Sangay, Lobsang. 2008. 'Agenda for the Special Meeting in Dharamsala' *Phayul*. 12 November, http://www.phayul.com/news/article.aspx?id=23208&article=Agenda+for+the+Special+Meeting+in+Dharamsala:+By+Dr.+Lobsang+Sangay (accessed on 15 November 2008).

Norbu, Jamyang. 2007. 'The Jewel in the Ballot Box: Electing a New Dalai Lama' *Phayul*. 18 December, http://www.phayul.com/news/article.aspx?id=18854(accessed on 5 January 2014)

Dalai Lama. 2011. 'Statement of His Holiness the Fourteenth Dalai Lama, Tenzin Gyatso, on the Issue of His Reincarnation', 24 September, http://www.dalailama.com/news/post/753-statement-of-his-holiness-the-fourteenth-dalai-lama-tenzin-gyatso-on-the-issue-of-his-reincarnation (accessed on 11 March 2013).

Dalai Lama. n.d. 'Questions & Answers', http://www.dalailama.com/biography/questions--answers (accessed on 3 February 2015).

Davis, Mark. 2014. 'Dalai Lama's Democracy' (Interview of the Dalai Lama by SBS ONE), 2 September, http://www.sbs.com.au/news/dateline/story/dalai-lamas-democracy (accessed on 12 January 2014).

Eigendorf, Jörg. 2014a. '*Der Dalai Lama will keinen Nachfolger mehr haben*' (Dalai Lama will have no successor) *DieWelt.* 9 September, http://www.welt.de/politik/ausland/article131976724/Der-Dalai-Lama-will-keinen-Nachfolger-mehr-haben.html (accessed on 24 September 2014).

Eigendorf, Jörg. 2014b. '*In meinenTräumenwerdeich 113 Jahre alt*' (In my dreams I'm 113 years old) *Die Welt.* 9 September 2014, http://www.welt.de/politik/ausland/article132019000/In-meinen-Traeumen-werde-ich-113-Jahre-alt.html(accessed on 24 September 2010).

Famularo, Julia. 2012. 'Spinning the Wheel: Policy Implications of the Dalai Lama's Reincarnation', 30 January, http://project2049.net/documents/spinning_the_wheel_famularo.pdf (accessed on 12 January 2014).

International Campaign for Tibet. 2007. 'New State Regulations on Recognition of Tibetan Reincarnates' *ICT Briefing Document*. 25 September, http://www.savetibet.de/fileadmin/user_upload/content/berichte/Briefing_Papier_Reinkarnationsgesetz.pdf (accessed on 12 January 2014). The Chinese text is available at Congressional Executive Commission on China. 2007. 'Measures on the Management of the Reincarnation of Living Buddhas in Tibetan Buddhism (ICT Translation)', 18 July (Retrieved on 2 August 2007), http://www.cecc.gov/resources/legal-provisions/measures-on-the-management-of-the-reincarnation-of-living-buddhas-in-0(accessed on 12 January 2014).

Nikkei Asian Review. 2014. 'Japan Interview – 'Dalai Lama leaves the succession question 'up to the Tibetan people', 25 November, http://asia.nikkei.com/Politics-Economy/Policy-Politics/Dalai-Lama-leaves-the-succession-question-up-to-the-Tibetan-people (accessed on 24 December 2014).

Ramzy, Austin. 2008. "Tibetans Fear for Their Future after the Dalai Lama", http://journalism.berkeley.edu/projects/greaterchina/story-tibetans.html (accessed on 22 January 2008.

Reuters. 2014. 'Dalai Lama's star waning in the West, China official says', 19 December, http://in.reuters.com/article/2014/12/19/us-china-tibet-idINKBN0JX08M20141219(accessed on 23 December 2014).

Sehgal, Saransh. 2011. 'Succession tensions rise in Tibet' *Asia Times Online*, 6 October, http://www.atimes.com/atimes/China/MJ06Ad01.html(accessed on 15 January 2014).

The Weekly Voice. 2011. 'Where Will the Next Dalai Lama be Born?', http://www.weeklyvoice.com/headlines/where-will-the-next-dalai-lama-be-born/ (accessed on 3 February 2015).

VoA. 2014. 'Last Dalai Lama' Report in German Newspaper Misleading', 9 September 2014 http://www.voatibetanenglish.com/content/article/2443709.html(accessed on 7 October 2014).

Xinhua. 2011. 'Why the Dalai Lama worries about rebirth', 26 September, http://news.xinhuanet.com/english2010/china/2011-09/26/c_131160859.htm (accessed on 23 December 2014).

The views expressed here are those of the author and not necessarily of the Institute of Chinese Studies.

The ICS is an interdisciplinary research institution which has a leadership role in promoting Chinese and East Asian Studies in India. The *ICS Analysis* aims to provide informed and balanced inputs in policy formulation based on extensive interactions among wide community of scholars, experts, diplomats and military personnel.

ICS ANALYSIS *BACK ISSUES*

No. 34 | Oct 2015	What does China's global economic strategy mean for Asia, India and the World?
No. 33 | Aug 2015	China's Role in Afghan-Taliban Peace Talks: Afghan Perspectives
No. 32 | Aug 2015	India's Myanmar Strike: The China Factor
No. 31 | July 2015	Deconstructing the Shanghai Stock Exchange Crash
No. 30 | May 2015	China and Vietnam: Neither Thick Friends nor Constant Antagonists
No. 29 | Mar 2015	Applying the 'Going Out' Strategy: Chinese Provinces and Cities Engage India
No. 28 | Mar 2015	China, the Debt Trap and the Future Prospects for its Economy
No. 27 | Feb 2015	Will he or Won't he? Recent Sino-Tibetan Exchanges over the Dalai Lama's Reincarnation
No. 26 | Jan 2015	China-Sri Lanka Ties Post-Rajapaksa: Major Changes Unlikely
No. 25 | Jan 2015	Chinese Combat Troops Join UN Peacekeeping Operations in South Sudan: A New Beginning?
No. 24 | Dec 2014	China's 'Going Out' Policy: Sub-National Economic Trajectories
No. 23 | Dec 2014	The Ebola Crisis: Responses from India and China
No. 22 | Nov 2014	18th CPC Central Committee Fourth Plenum: Rule of Law with Chinese Characteristics
No. 21 | Nov 2014	The New BRICS Development Bank and the Aid Architecture

PUBLICATIONS

A short brief on a topic of Contemporary interest with policy-related inputs.

Platform for ongoing research of the ICS faculty and associates.

Authored by the faculty, also emerging from research projects and international conferences.

In draft form and are works-in-progress.

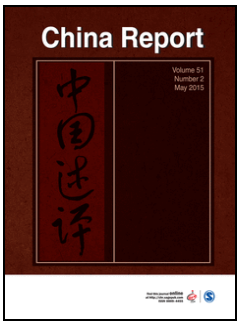

In its 51st year of publication, *China Report* is a quarterly referred journal in the field of social sciences and international relations. It welcomes and offers a platform for original research from a multi-disciplinary perspective in new emerging areas by scholars and research students.

China Report is brought out by Sage Publications Ltd, New Delhi.

Editor	Madhavi Thampi
Assistant Editor	Jabin T. Jacob
Book Review	Kishan S. Rana

8/17, Sri Ram Road, Delhi - 110054, INDIA
Tel: +91-11-2393 8202 | Fax: +91-11-2383 0728
info@icsin.org | http://icsin.org